बी.एच.डी. ई.–144 / छायावाद / **Honours**

BHDE-144 छायावाद (Honours)

सत्रीय कार्य

(केवल जनवरी 2024 सत्र हेतु)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.–144 : छायावाद

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई–144 /

प्रिय छात्र / छात्राओ!

'छायावाद' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरभं करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : ....
नाम : ....
पता : ....
....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....
अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : .... दिनांक : ....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :
जनवरी 2024 : 31 अक्टूबर, 2024

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

सत्रीय कार्य के तीन खंड हैं और उसमें तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

   यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
   क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
   ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
   ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

   1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
   2. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य
(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी..ई–144 / **Honours**
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ई–144 / जनवरी 2024
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – क

निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिये : **10×4=40**

1. इस ग्रहकक्षा की हलचल–री, तरल गरल की लघु–लहरी
जरा अमर–जीवन की, और न कुछ सुनने वाली, बहरी
अरी व्याधि की सूत्र–धारिणी! अरी आधि, मधुमय अभिशाप!
हृदय–गगन में धूमकेतु–सी, पुण्य–सृष्टि में सुंदर पाप।

2. चपलायें उस जलधि विश्व में स्वयं चमत्कृत होती थीं
ज्यों विराट बाड़व ज्वालायें खंड–खंड हो रोती थीं।
जलनिधि के तल वासी जलचर विकल निकलते उतराते
हुआ विलोड़ित गृह, तब प्राणी कौन! कहाँ! कब! सुख पाते?

3. मानस सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल कल ध्वनि से हैं कहती
कुछ विस्मृत बीती बातें
आती है शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती सी
पगली सी देती फेरी।

4. हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले बालों से
हृदय–राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की–सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बाँह
छाँह सी अम्बर–पथ से चली।

खंड –ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : **10×4=40**

5. छायावाद के उद्‌भव पर प्रकाश डालते हुए छायावाद का महत्व भी समझाइए।
6. जयशंकर प्रसाद के शिल्प–विधान पर प्रकाश डालिए।
7. निराला काव्य की अन्तर्वस्तु की विशेषताएँ बताइए।
8. महादेवी वर्मा की कविता 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' के मूल स्वर को रेखांकित कीजिए।

खंड –ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए : **5×4=20**

9. छायावादी कवियों के काव्य शिल्प पर प्रकाश डालिए।
10. सुमित्रानंदन पंत के काव्य में अभिव्यक्त जीवन दर्शन को रेखांकित कीजिए।
11. 'मोह' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।
12. महादेवी वर्मा के काव्य की मूल विशेषताओं की चर्चा कीजिए।